IJAER/ Oct-Nov 2012 /Volume-1/Issue-3/Article No-29/342-346 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

जयपुर पतन के कारण तथा घटनायें

अर्चना चौहान असवाल
पी0द0ब0 पीजी कालेज कोटद्वार
हे0न0ब0ग0वि0वि0 उत्तराखण्ड

राज्यों के उत्थान तथा पतन की क्रिया प्रकृति के सिद्वांत के अनुकूल है किन्तु कुछ कृत्रिम कारण इस प्रक्रिया को मंद या तीव्र कर देते हैं। भारत के मध्यकाल का अध्ययन करते हुए हम पाते हैं कि राज्यों के उत्थान तथा पतन में राजाओं की योग्यताओं का व्यक्तिगत महत्व होता था क्योंकि उस समय राजा ही एक मात्र शासन का केन्द्र होता था उसके अयोग्य दुराचारी तथा ि"थिल होने पर शासन शीघ्र बिखर जाता था । यह प्रक्रिया अन्य विकेन्द्रीकरण करने वाली शक्तियों को सक्रिय कर देती थी तथा राज्य का विना"ा अति शीघ्र हो जाता था।

प्रस्तुत लेख में हम उन घटनाओं का वि"लेषण करेंगे जिससे जयपुर के पतन की प्रक्रिया को बढावा मिला।

मुगल साम्राज्य का पतन :
कछवाहा तथा मुगल एक दूसरे पर आपसी हितों के लिए निर्भर थे। जब तक मुगल योग्य तथा प्रतापी रह तब तक मुगल साम्राज्य उन्नति की ओर अग्रसर रहा जैसे ही वे ि"थिल हुए साम्राज्य बालू की दीवार के समान बिखर गया। अंतिम योग्य शासक मुगल औरंगजेब था किन्तु उसके चरित्र में अति का गुण था, जिस कारण उसने विभिन्न जातियों को नाराज कर दिया, साम्राज्य का अधिक विस्तार होने से शासन में ि"थिलता आ गयी, मुगल दरबार मे मनसबदारों की संख्या बढने से औरंगजेब तथा परवर्ती मुगलों ने उमरा की जागीरों को खालसा करने की कोि"ा"ा की फलस्वरूप मुगलों तथा उमरा के सम्बन्ध खराब होने लगे । अन्दर से राजपूतों के विरूद्व होते हुए भी औरंगजेब उन्हें महत्वपूर्ण समझता था तथा एक आव"यक संतुलन बनाकर रखता था। किन्तु परवर्ती मुगल इस संतुलन को बनाकर न रख सके। बहादूर शाह प्रथम ने 1707 में जयसिंह एंव विजय सिंह के झगडे का लाभ उठाकर विजय सिह को मिर्जा राजा की पदवी दे दी तथा आमेर को खालसा घोषित कर दिया जिससे जयसिह रूष्ठ हो गया तथा मेवाड़ तथा जोधपुर से संधि कर वह मुगलों से लड़ने को तैयार हो गया बाद में मुगल बाद"ााह ने किसो प्रकार जागोर तथा सूबेदारी देकर राजी किया तबसे वह मुगलों से घृणा करने लगा एंव साम्राज्य का हित सोचना बन्द कर दिया। जिस समय रफीउद् दौला की मृत्यु पर मुहम्मद"ााह बाद"ााह बना उसने सयद बंधुओं के कहने से जयसिंह पर फौज भेज दी किंतु आगरा से 81 मील दक्षिण पि"चम टोडा टोंक में डेरा डाल दिया यहां तक आमेर की सीमा थी, मुगल फौज सामने पड़ी रहो बाद में समझौता हो गया। इस प्रकार की घटनोंओं ने राजपूतो को मुगलों के खिलाफ कर दिया, इसका कारण था कठपुतली के समान राजाओं का शासन, मुगल सिंहासन पर अपनी योग्यता से न बैठकर अन्य व्यक्तियों द्वारा बैठाये जा रहे थे राजपूत प्राचीनकाल से ही व्यक्तिगत अभिमान को ज्यादा महत्व देते थे तथा उनमें क्षमा का अभाव था वे एक दूसरे से लालच तथा ईर्ष्या व युद्ध करने लग इससे अन्य ताकतों को राजपूतान में प्रवे"ा करने का मौका मिला। राजपूतों के आपसी झगड़ों पर अकबर जैसे प्रतापी शासक ने रोक लगा दी थी, अकबर ने राजपूतों की युद्वप्रियता को एक नई दि"ाा दी जिससे अकबर तथा राजपूत दोनों को लाभ हुआ किन्तु परवर्ती मुगल एसा करने में असफल रहे फलस्वरूप मुगल तथा राजपूताना दोनों का विना"ा हुआ और जयपुर– आमेर का कछवाहा राजव"ां भी इसी सन्दर्भ में आता है।

जाट शक्ति का उदय :
जाट पि"चमी भारत से लेकर दोआब के मैदानों में निवास करन वाली कृषक जाति थी यह कठोर परिश्रमी एंव व्यक्तिगत स्वतंत्रता को आव"यक मानने वाली जाति थी। पंजाब, राजपूताना तथा संयुक्त प्रान्त में इनकी आबादी काफी थी, राजपूताना में ये सबसे पहले बीकानेर एंव जैसलमेर राज्य में आकर बसे बीकानेर के संस्थापक राव बीका ने रज्य की स्थापना में इनसे बड़ी सहायता ली इसके प"चात जाट राजपूताना के विभिन्न भागों में फैल गये अलवर के जाट पंजाब की ओर से आये थे पि"चमी उत्तरप्रदे"ा तथा आगरा धौलपुर मे इनकी बड़ी आबादी निवास करती थी औरंगजेब की नीति

से जाट अप्रसन्न थे वे अपनी शक्ति को लगातार मजबूत कर रहे थे, बि"ानसिंह जो मथुरा का फौजदार था को आदे"ा मिला कि जाटों का उपद्रव शांत करे वि"ानसिंह ने सिसाणी के जाटों पर शीघ्र हमला कर दिया जाटों ने राजपूतो तथा मुगलों को बराबर की टक्कर दी । इनका दूसरा गढ भरतपुर से 4 मील उत्तर की ओर सोघट में था जहां जाटों का दमन कर दिया गया किन्तु ये शक्ति समाप्त न की जा सकी। सवाई जयसिंह के समय तक ये कछवाहों के अधीन सामांत रहे भरतपुर का जाट शासक सूरजमल अपने को जयपुर नरे"ा के अधीन मानता था तथा द"ाहरे को जयपुर दरबार में उपस्थित हुआ करता था लेकिन उसका पुत्र जवाहर सिंह अपने को स्वतंत्र शक्ति मानने लगा था वह अपनी सेना को यूरोपीय सेनानायक समरू तथा रेने से प्र"िाक्षण दिलवाने लगा तथा जयपुर राज्य के नारनौल परगने पर कब्जा करने की बात सोचने लगा उन्होंने रेवाड़ी तथा काकोड तथा लूटमार करनी शुरू करदी जयपुर नरे"ा को जाटों को बाहर खदेड़ने के लिए मराठों की सहायता लेनी पड़ी । जवाहर सिंह नें जोधपुर नरे"ा से मित्रता करने की को"ि"ा की किन्तु माधोसिंह ने जवाहर सिंह को एक हीन व्यक्तिमान (कृषक पुत्र) उसकी मित्रता से रूचि नहीं दिखायी इस पर जवाहर सिंह ने पष्कर से लौटते समय जयपुर राज्य के गांवों में लूट लिया जिस पर 1767 में माधेसिंह ने जाटों की सेना पर हमला कर दिया जवाहर सिंह की सेना बुरी तरह पराजित हई किन्तु माधोसिंह की सेना को भी काफी नुकसान हुआ तथा इस युद्ध में जयपुर के ठाकुरों का कोई परिवार एसा नही था जिसका कोई सदस्य मारा न गया हो। धूला के ठाकुर एंव जोबनेर के ठाकुर की तीन पीढियां इस युद्ध में काम आयी इस युद्व से पता चलता है कि जाट शक्ति ने किस प्रकार जयपुर के पतन का मार्ग प्र"ास्त किया।

अलवर का उदय :

अलवर के प्रताप सिंह का उदय भी जयपुर के पतन के लिए काफी जिम्मेदार रहा प्रताप सिंह कछवाहों की ही शाखा नरूका से था, उसने माचेडी के ढाई गांव जागीर में प्राप्त किये थे इसका प्रभाव सन् (1778–1803) के बीच बढ रहा था इस समय जयपुर नरे"ा सवाई प्रताप सिंह था, जयपुर का एक मंत्री फिरोज था फिरोज को मरवाकर प्रतापसिंह नरूका ने, खु"ाालीराम हल्दिया को जयपुर मंत्रीमण्डल का सदस्य बना दिया इसकी नीति जयपुर में बराबर दखल करने की रही । इसने सवाई पृथ्वी सिंह के पुत्र मानसिंह को छोटे भाई प्रताप सिंह के विरूद्व खड़ा करने की को"ि"ा की उसने जाटों से अलवर दुर्ग को छीन लिया क्योंकि अलवर के रक्षको को वेतन नहीं मिल पा रहा था इसलिए उन्होंने प्रतापसिंह को अपना स्वामी मान लिया तब उसने माचेड़ी के स्थान पर अलवर को अपनी राजधानो बनाया अलवर लेने के बाद सभी नरूका प्रताप सिंह को अपना मुखिया मानने लगे सिवाय राजगढ़ के ठाकुर के जिसे प्रताप सिह ने मरवा दिया। 1779 ई0 के लगभग प्रताप सिह ने जयपुर के बसवा ग्राम को लूटा जहां से उसने 20 लाख रूपये का माल प्राप्त किया। 1781 में प्रतापसिह के नरूका सरदारों ने जयपुर के कुछ इलाका पर कब्जा कर लिया जिसे निकालने के लिए खु"ाालीराम बोहरा ने सेना भेजी किन्तु वह कुछ न कर सका। उसन जयपुर के खिलाफ सिंधियां को मदद करने को नीति अपना रखी थी तुगा के युद्ध में निरा"ा होने के बाद उसने सिंधियां को अपने राज्य में ठहराया वह कछ दिन तक प्रतापसिंह के पास ही रहा इस समय सिंधियां बड़ी दयनीय परिस्थिति में था उसने पास धन के नाम पर केवल पत्नियों के गहने ही रह गये थे रावराजा प्रतापसिंह ने स्वयं 1 लाख रूपया दिया तथा छः लाख रूपया साहकारों से दिलवाया बाद में सिंधियां को अन्य स्थानों से भी धन मिल गया जिससे उसने अपनी आर्थिक स्थिति सुधार ली यह मदद सिंधियां को प्रताप सिह ने तब की जब सिंधियां को उसकी सख्त आव"यकता थी । पाटन के युद्ध में प्रताप सिह ने सिंधिया की मदद से इस युद्ध में मराठा सिंधिया तथा होल्कर एक तरफ थे जबकि दूसरी तरफ जयपुर, जोधपुर, तथा इस्माइल वेग थे उसमें मराठे विजय हुई उस युद्व मे सिंधियां को प्रताप सिह ने मदद दी थी। इस तरीके से अलवर राज्य जयपुर राज्य को निर्बल करके उसके क्षेत्र पर कब्जा करता जा रहा था इस युद्ध मे जयपुर पूर्णतया शक्तिहीन हो गया था, अब प्रताप सिंह जयपुर राज्य की ओर से नि"ाचिन्त हो गया था। प्रतापसिंह के उदय से जयपुर राज्य को बड़ी हानि उठानी पड़ी।

ज्यष्ठाधिकार का उल्लंघन :

राजपूत राज्यो में ज्येष्ठाधिकार का प्रचलन था इसके अनुसार राज्य का स्वामी ज्येष्ठ पुत्र होता था तथा शेष भाईयों को कवल निर्वाह लायक ही जागीर मिलती थी। यह नियम प्रचीनकाल से चला आ रहा था किन्तु जयपुर के राजाओं ने इस प्रकार के वचन–वादे कर दिये जिससे ज्येष्ठाधिकार का उल्लंघन हाता था। फलतः उत्तराधिकार के युद्ध हुए जिसमें राज्य के जनधन की हानि हुई और जयपुर राज्य उत्तरोत्तर कमजोर होता चला गया।

सवाई जयसिंह द्वितीय ने उदयपुर में रहते हुए 25 मई 1708 को महाराणा की पुत्री चंद्रकुंवरी से ब्याह इस शर्त पर कर लिया कि इस चन्द्रकुवरी से उत्पन्न पुत्र ही आमेर की गद्दी पर बैठेगा यदि लड़की हुई तो वह मुसलमानों को नहीं दी

जायेगी अर्थात उसका विवाह मुगलों से नहीं किया जायेगा। उस समय सवाई जयसिह आमेर को प्राप्त करने के लिए उदयपुर की मदद चाहता था, और उदयपुर परिवार से वापस विवाह सम्बन्ध करने की तीव्र इच्छा थी आमेर वालों के विवाह बन्द कर दिये थे। जयसिंह का शर्त मान लेना न केवल जयपुर वरन सम्पूर्ण राजपूताने के लिए दुःखदयी रहा। इस राजकुमारी से माधोसिंह नामक पुत्र उत्पन्न हुआ सवाई जयसिंह की मृत्यु हो चुकी थी। जयसिंह के अंन्य पुत्र ई"वरी सिंह को बाद"ााह ने मान्यता दे दी तथा सिंहासन ई"वरी सिंह का प्राप्त हुआ उदयपुर के महाराणा जगतसिंह ने अपने भाजे माधोसिंह का पक्ष लिया तथा वह सेना चढाकर जयपुर ले आया इस पर ई"वरी सिंह भी सेना लेकर तैयार हो गया दोनों सेनाओं में जामोली गांव के आस–पास सेनायें पड़ी रही लेकिन युद्व नहीं हुआ 40 दिन तक सेना पड़े रहने के बाद यह संधि हुई कि ई"वरी सिंह, माधोसिंह को लगभग 24 लाख रूपये वार्षिक आय के टोंक, व टोडा परगना देगा सेनायें वापिस लौट गई किन्तु माधोसिंह आधा राज्य कम से कम चाहता था अतः वह अपने भाई से झगड़ा करता रहा उदयपुर का राणा माधोसिंह के साथ था किन्तु मराठों को ई"वरी सिंह ने अपनी तरफ मिला लिया माधोसिंह का पक्ष कमजोर पड़ गया तथा उसका मामा उदयपुर का राणा वापस चला गया। बूंदो के पदच्युत उत्तराधिकारी दलेलसिंह से मिलकर उसने पे"ावा की मदद प्राप्त करने की को"ाि"ा की पे"ावा ने माधोसिंह का पक्ष लिया तो जयप्पा ने ई"वरी सिंह का पक्ष लिया दोनों सेनाओं के मध्य देवली के निकट राजमहल नामक स्थान पर युद्व पर युद्ध हुआ ई"वरी सिह की विजय हुई तथा माधोसिंह पराजित हुआ भीलवाड़ा पर जयपुर का कब्जा हो गया राणा उदयपुर ने संधि कर ली। दूसरा युद्ध बगरू का युद्ध था जिसमें ई"वरी सिंह की हार हुई जयपुर के हाथ से निकल गये परगनों में वेडा, टोंक निवाई तथा मालपुरा थे माधोसिंह को ये प्राप्त हुए बाद में ई"वरी सिह की मुत्यू से माधोसिंह को सहज ही सम्पूर्ण जयपुर प्राप्त हो गया। ''इन युद्वो से जयपुर की शक्ति निरंतर घटती जा रही थी तथा मराठों की दखल व ल्टमार जयपुर ही नहीं वरन सम्पूर्ण राजपूताना में बढ गयी थी।

जयपुर क शासकों में अयोग्यता,अदूरदशिता,चारि त्रिक पतन :

जयपुर के शासकों ने अकबर के शासनकाल में बड़ी चारित्रिक दृढता अपनाई ये वही कछवाहे थे जिन्होंने मुगल सम्राट की जान पर खेलकर रक्षा की थी। एक बार मानसिंह ने शाही कोष पर कब्जा करने के लिए कोष के रक्षक रामदास से चाबियां मांगी जिसका वर्णन कुछ इस प्रकार से है।

आजम खां की लगातार प्रार्थना करने के प"चात भी जब रामदास ने कोषागार की चाबियां नहीं दी तब राजा मानसिंह ने बीच मे आने का नि"चय किया उसने रामदास से प्र"न किया क्या वह जानता है कि वह (मानसिंह) कौन है और वह क्या नहीं कर सकता है, रामदास ने जवाब दिया नहीं महाराजा मैं आपको भूला नहीं हूं आपको कैसे भूल सकता हूं मुझे अच्छी तरह याद है कि हम सब एक ही कुटुम्ब के हैं वहीं खून आपकी नसों मे बह रहा है अगर कोई फर्क है तो इसका कारण कर्तव्य के प्रति भक्ति की भावना इस पर मानसिंह क्रोधित होकर बोला रामदास तुम अपनी बकवास बन्द करो, अगर नही.....इसी बीच रामदास बोल पड़ा तुम क्या कर सकते हो। तुम मेरी जीभ काट लोगे पर हम राजपूत इसकी परवाह नहीं करते बहादुरी पूर्ण मौत के लिए हम तैयार रहते हैं तम मेरा सिर काट सकते हो पर मुझसे शाही खजाने की चाबी नहीं ले सकते जब तक मैं जिन्दा हूं मेरे मरने पर ही चाबियां तुम्हें मिलेगी, रामदास को मानसिंह नें साधरण हैसियत का राजपूत समझा था किन्तु चारित्रिक दृढता से जिसने कछवाहों को उन्नति के पथ पर अग्रसर किया।

किन्तु बाद के राजाओं में एसी चारित्रिक दृढता देखने को नहीं मिलती ई"वरी सिंह ने अपने दीवान हरगोविन्द नाटाणी की पुत्री को अपनी प्रेमिका बना रखा था, उसको प्रतिदिन देखने के लिए उसने दूसरो लाट बनवायी, नाटाणी की इस कारण बड़ी बदनामी हुई वह ई"वरी सिंह को नीचा दिखाने की जुगत भिड़ाने लगा इस तरह नरे"ा का प्रमुख दीवान ही उसके खिलाफ हो गया। जब होल्कर ने 1750 में जयपुर पर चढ़ाई को तो प्रधान मंत्री ने कहा सेन बिल्कुल तैयार है आप बेफिक्र रहे लेकिन जब होल्कर जयपुर के बिल्कुल समीप आ गया तब उसने स्पष्ट कहा कि सेना तैयार नहीं है जहां ई"वरी सिंह को अपनी राजपूती शान बनाये रखने के लिए युद्व में लड़ते लड़ते मरना चाहिए था वहीं उसने घबराकर विषपान किया तथा काले नाग से डसवा कर आत्महत्या कर ली।**1757 ई0 में जयपुर** –मराठा विवाद के समय कछवाहा सरदारों का इतना पतन हो गया था कि वे 80000 रूपये लेकर जयपुर नगर के द्वार तक खोलने क लिए तैयार थे ।

उसी प्रकार प्रताप सिंह पांव में घुंघरू बांधकर नाचा करता था वही महिलाओं के वस्त्र पहनकर जनाना खाने में नृत्य करता था जो कि प्रतापी कछवाहों के अनुकूल नहीं थी। एक अन्य उदाहरण है अवध के पदच्यूत नवाब ने (नवाब वजीर

अली) कछवाहा नरे"ा प्रताप सिंह के यहां शरण ली किन्तु अंग्रेजों ने राजा प्रताप से नवाब को वापस मांगा इस पर प्रताप सिंह ने प्राण रक्षा तथा पांव में बेड़ी न डालने के वायदे के साथ बजीर अली को अंग्रेजों को सौंप दिया राजा ने अपने शरणागत धर्म की रक्षा नहीं की थी इससे उसकी बड़ी बदनामी हुई। इतिहास साक्षी है कि शरणागत की रक्षा के लिए राजपूतों ने अपने सम्पूर्ण व"ा की आहुति दे दी थी।

जयपुर नरेश का अपने सरदारों पर नियंत्रण समाप्त :

विभिन्न कछवाहा सरदार जयपुर से स्वतंत्र होने का प्रयास करने लगे थे जैसे माचेड़ी के प्रतापसिंह ने अलवर की स्वतंत्र रियासत कायम कर ली थी। पृथ्वी सिंह के काल में शेखावतों एंव नाथावतों में आपसी अनबन बहुत बढ गई थी शेखावतों का मुखिया मनोहपुर का जागीरदार था वह विद्रोही हो गया था, सूरजमल जाट भी जयपुर से स्वतंत्र रियासत बनाने लगा था। इसी प्रकार अमीर खां ने टोंक मे अपनी शक्ति बहुत बढा दी थी।सन 1773 ई0 में नजफ कुली खां ने जयपुर राज्य से कामां का दुर्ग ले लिया था, 10 जून 1784 को धौलपर के मुहम्मद बेग हमदानी ने कामा को बुरी तरह लूटा इस प्रकार की घटनाओं ने सम्पूर्ण आमेर–जयपुर में अव्यवस्था फैला दी थी। जिसके कारण जयपुर नरे"ा के जन–धन तथा प्रतिष्ठा एंव राज्य सभी का ह्रास होने लगा था।

युद्व की पुरानी पद्वति :

वास्तव में राजपूतों की लड़ने की पद्वति प्राचीन थी वह आधुनिक काल के पहुंचते–पहुंचते व्यर्थ हो गयी थी। प्रताप सिंह ने मराठों से संधि की 1791 में उसके अनुसार मराठों को चौथ देनी थी, पिछले कुछ वर्षों से उसने चौथ देना बन्द कर दिया था, सिंधिया के प्रमुख अधिकारी लकवा दादा ने जयपुर से चौथ की मांग की तो प्रताप सिंह ने स्पष्ट मना कर दिया, इस पर लकवा दादा न जयपुर पर हमला कर दिया प्रताप सिंह तथा भीमसिंह जोधपुर मराठों के खिलाफ लड़ने लगे किन्तु उनकी पद्वति अत्यन्त पिछड़ी हुई थी 16 अप्रेल 1880 को मालपुरा से 4 मील दूरी पर युद्व हुआ ''राठारों के घोड़ों का हिनहिनाना युद्वघोष से भी ज्यादा सुनाई दे रहा था उन पर गोलियों की वर्षा की गई लेकिन उनका उन पर कोई असर न हुआ वे न तो गोलियों से रूके और न ही संगीनों की मार से पीछे हटे वे जिस पर भी टूटे उसका नि"ाान बाकी न रहा'' स्कीनर अंगज आंखों देखा कहि। मराठों की सेना का एक पक्ष भाग खड़ा हुआ ओर राठोरों को ही अधिक हानि हुई पीछे बची सेना को मराठों ने बूरी तरह हराया तोपों की मार से जयपुर की सेना भी भाग खड़ी हुई।

मराठों का राजपुताना में प्रवेश :

मराठे राजपूतों से सर्वथा भिन्न मानसिकता तथा व्यवहार वाले थे उनकी नैतिकता राजपूतों से बहुत नीचे स्तर की थी, f"ावाजी ने भी मुगलों के विरूद्व इसी नीति का प्रयोग किया था यही उनकी सफलता का कारण था लाभ सर्वोपरि होना। औरंगजेब तथा सवाई जयसिह के काल में ही मराठे उत्तर भारत में प्रवे"ा करने लगे थे किन्तु जयसिंह ने इनको मालवा में प्रव"ा करने से रोकता रहा तथा मराठों को नर्मदा में पार खदेड़ दिया

जयसिंह द्वितीय ने वि"ाालगढ़ के किले पर कब्जा करने के समय शाहू व कई मराठा सरदार के साथ मित्रता कर ली थी। जयसिह ने बून्दी के सिंहासन का पक्ष लिया जिसके कारण मराठों ने सालमसिंह को छोड़ने की एवज में 2 लाख रूपये लिया। बून्दी के उत्तराधिकार मामले में हस्तक्षेप करने के कारण जयसिंह सवाई तथा राजपूताना के अन्य राज्यों ने भी मराठों को राजस्थान से बाहर निकालने के लिए हरड़ा (उदयपुर) में सम्मेलन बुलाया जिसमें राजपूताना की रियासतें आई लेकिन आपस में सहमति ना हो सकी जयसिह को बाद में संधि करके 22 लाख रूपये देने पड़े। माधोसिंह की सहायता के लिए मराठे एक करोड़ में राजी हुए थे लेकिन बाद में पलट गये। मराठे बाद में 10 लाख रूपये में माधोसिंह कि सहायता के लिए तैयार हुए। माधोसिंह को मल्हाराव ने गद्दी पर बैठाया तथा सम्राट निर्माता की भूमिका मे मराठे आने लगे माधोसिंह के काल में ही मराठा राजपूत विवाद मे मराठों ने जयपुर से 2 लाख रूपया लिया तथा राजगद्दी पर बैठाने के बदले सेना खर्च भी लिया गया।

सन् 1757 में रघुनाथ राव जयपुर में घुस गया और बरवाज को घेर लिया तथा माधोसिंह से 40 लाख की मांग की लेकिन 11 लाख पर समझौता हुआ सिंधिया ने 36 लाख की मांग की जो 4 वर्षों में दिया जाना था किन्तु 1761 में पानीपत में मराठे पराजित होने पर बात टल गयी।

इस प्रकार मराठे टंाके तथा चौथे के नाम पर राजपूताने को लूटने गये जब तक कि जयपुर अंग्रेजों की शरण में नहीं चला गया ''मराठों ने एक राजपूत आसामी को घेर लिया जो राजपूत सरदार था उसने अपने राजपूतों को आदे"ा दिया घोड़ों की जांघे काट दा आज हम घोड़े पर सवार होकर आयेंगे नही बल्कि इन मराठा लुटेरों को मारेंगे या खुद मर जायेंगे एसा देखकर मराठों ने धन की अधिक आ"ाा न देखी तो वे राजपूत सरदार को छोड़कर अपने घोड़ों पर सवार होकर खिसक लिए। मराठों का एक मात्र उद्दे"य लाभ था न कि युद्व करना, वे लाभ के लिए युद्व करते थे न कि शौर्य के लिए।

जयपुर राज्य आपसी तथा बाहरी लड़ाईयों के कारण थक चुका था, आमीर खां पिण्डारी तथा जाट शक्तियां उभर रही थी, अतः प्रताप सिंह को अंग्रेजों की शरण में जाना पड़ा तथा 22 जुलाई 1803 को बेलेजली से संधि कर ली किन्तु इससे पूर्व प्रताप सिंह की मृत्यु हो गयी तथा जगत सिंह से अंग्रेजों ने संधि की तथा जयपुर राज्य अंग्रेजों का अधीनस्थ बनता चला गया।

सन्दर्भ सूची

1.प्राचोन भारत का इतिहास,केसी श्रीवास्तव
2.मध्यकालोन भारत,एचसी वमा
3.पश्चिमी भारत की यात्रा,कनल टॉड
4.बैटल ऑफ जयपुर,रावल नरेन्द्र सिहं
5.वोर विनोद भाग दो,श्यामल दास
6.राज मान सिहं ऑफ आमेर,राजीव नयन प्रसाद
7.कछवाहों का इतिहास,जगदोश सिहं गहलौत
8.क्षत्रिय शाखाओं का इतिहास,देवी सिहं मण्डावा
9.नैणसी की ख्यात,मुहणोत नैणसी
10.खंगारोतो का इतिहास,राघवेन्द्र सिहं मनोहर
11.पूना येथिल मराठा याचेन,राजकारणे जिल्द एक
12.कछवाहों का इतिहास,देवी सिहं मण्डावा